रात्रि क्लास 10/7/68 :– बच्चों को बेहद का बाप बेहद की बहुत मीठी2 बात सुनाते हैं जो और कोई सुना न सके। शास्त्र आदि तो जन्म–जन्मान्तर सुनते आये हैं। बेहद का बाप बिल्कुल नई बात सुनाते हैं; इसलिए मनुष्य मुँझते हैं। बच्चों को समझाया गया है यह नॉलेज कोई शास्त्रों आदि में नहीं हैं। भल है गीता; परन्तु वह भक्ति मार्ग की गीता नहीं। उनको राजयोग कहा जाता है। सुनाने वाला है नया तो जरूर वह नई बात ही सुनावेंगे। बिचारे मनुष्य तो समझ न सके। तुम बच्चे समझते हो बाबा हर 5000वर्ष बाद यह बातें सुनाते हैं। यह बात कोई जानता नहीं। वह जो कुछ सुनाते हैं वह मनुष्य खुद पढ़ सकते हैं। जो सन्यासी पढ़कर सुनाते हैं वह गृहस्थी भी पढ़कर सुनाते हैं। ...हो वेद–उपनिषद गीता आदि। घर में भी गीता आदि पढ़ेंगे। नाम तो गीता है ना। पहले2 ही सुनाते हैं यदा यदा कि(ही) धर्मस्य..... बाप तो कहते हैं मैं तुम्हारा बाप हूँ। तुम भूल गये हो। शिवबाबा आते हैं तो जरूर बेहद की बादशाही स्वर्ग देंगे। स्थापना करने वाला ही वह है। बेहद का बाप बेहद का वरसा देंगे। स्थापन करने वाला ही वह है। बेहद का बाप बेहद का वरसा देते हैं नहीं तो सूर्यवंशी देवी–देवताओं की राजधानी किसने स्थापन की। ऐसे नहीं राधे–कृष्ण ने स्थापन किया। नर से नारायण बनाने लिए, नारायण वा कृष्ण को नहीं आना है। जबकि है ही तमोप्रधान दुनिया। बच्चों को बहुत सहज लगना चाहिए। फिर भी 40 वर्ष मिलते हैं समझाने लिए। बाप कहते हैं दिन प्रतिदिन गुह्य बातें सुनाता हूँ। पहले वाली बातें इतनी गुह्य नहीं थी। हम भी समझते समझते आये हैं। करांची में 14 वर्ष रहे। 14 वर्ष वनवास में रहे। अभी मीठे2 बच्चे समझ गये हैं जब शिवबाबा आते हैं तो स्थापना करते हैं। विनाश भी जरूर कराते हैं। जब स्थापना हो उसके बाद विनाश होगा। वास्तव में 40 वर्ष लगते हैं। शास्त्रों में ब्रह्मा की 100 वर्ष की आयु। तो शिवबाबा 60 वर्ष में आये। 40 वर्ष तुमको लगे। आठ वर्ष भी अभी बहुत दिखाई पड़ती है। समझते हैं विनाश जल्दी होना है। तैयारियाँ ऐसी हुई पड़ी हैं। डिक्लीयर कर चुके हैं। ऐसे बनाये हैं जो ऐसे करने से ही खत्म हो जावेंगे। इनसे नई खोप(फ)नाक चीज़ अभी बनाते नहीं है। विनाश भी देखा स्थापना भी देखी है। तो निश्चय भी होता है। सर्विस बहुत करनी है। पैगाम पहुँचाना है गांव–गांव में। यहाँ कहते हैं फ्लाने जगह सेन्टर नहीं हैं? हम निमंत्रण देते हैं। अभी तो बरसात है। बरसात पूरी होने बाद फिर जावेंगे। निमंत्रण बहुत मिलते हैं। सिर्फ बच्चियाँ तैयार नहीं हैं। माताओं को पति से छुट्टी नहीं मिलती है। फिर कन्याओं को कहा जाता है तुम ही खड़ी हो जाओ। सर्विस पर माताएँ कम निकलती है; क्योंकि बन्धन में हैं। सतयुग में है पवित्र दुनिया। यह है पतित दुनिया। कहती है बाबा शादी के पहले क्यों नहीं आये तो हम फंसते नहीं थे। ऐसे डोरापा देते हैं। बाबा बच्चा न होता तो भी बन्धन मुक्त

होते। बाबा कहते यह ड्रामा की भावी है। राय दी जाती है परन्तु पुरुष लोग जब समझे ना। समझते ही नहीं। यह रावण राज्य है, बेसमझों की दुनिया। बेसमझ मंदिर में समझदार आगे जाते हैं। मंदिर के आगे हाल लेकर भाषण करो। तुमको यह बनाते हैं आकर समझो। यह लक्ष्मी–नारायण समझदार थे सो अभी बेसमझ बने हैं। फिर जरूर वह राज्य करेंगे। आवेंगे। कोई ने राज्य छीना है। यह किसको पता नहीं है। देवताओं से राज्य किसने छीना? माया रावण ने। बाप ने यह कथा सुनाई है। रावण ने छीना है फिर मैं आया हूँ रावण पर जीत पहनाने। तो शिवशक्ति सेना में दाखिल हो जाना चाहिए। हम अपना राज्य स्थापन करें या टाइम वेस्ट करें। याद की यात्रा में ही माया के विघ्न पड़ते हैं। यह राजयोग है। सन्यासी सिखला न सके। बाप सिखला रहे हैं। एमआबजेक्ट ही यह है। हम विश्व में शान्ति का राज्य स्थापन कर रहे हैं। भारतवासी यह ही मांगते हैं। चित्र कितना अच्छा बनाया हुआ है। **6×9** साइज के चित्र ट्रान्सलाइट की हो तो बहुत अच्छा। कहते हैं छत इतनी बड़ी नहीं है। 10'' से कम छत होती नहीं। अच्छा नहीं सही तो **6×4** का बनाओ।

तुम बच्चे जानते हो कि हम पढ़ रहे हैं। हमारे लिए नई दुनिया जरूर चाहिए। इसलिए हर 5000वर्ष बाद ही लड़ाई लगती है। बच्चों के सामने एमआबजेक्ट खड़ी है। और स्वदर्शनचक्र चलाना है। बस। विष्णु को स्वदर्शन चक्र दिखलाते हैं ना। बेहद का बाप मिला है तो खुशी बहुत होनी चाहिए। झट बाबा का बन जाना चाहिए। न बने और कल शरीर छूट जाये तो वरसा मिल न सके। कितनी नाजुक बातें हैं। मौत पर तो भरोसा नहीं। गाते हैं ना सिमर–सिमर सुख पाओ। बाप को सिमर सुख पाओ। कल(ह)–कलेश मिटे सब तन के। 21 जन्मों के लिए सभी बीमारियाँ खत्म हो जावेंगी। जीवन मुक्ति पद पाओ। गायन भी है ना तकलीफ की बात नहीं। बेहद के बाप को सिर्फ याद करना है। टाइम वेस्ट बिल्कुल न करना है। कन्याओं को नौकरी करना तो कायदे के विरुद्ध है। बाप कहते हैं तुमको अभी नौकरी करनी नहीं है। यह सेवा करनी है। मनुष्य को हीरे समान बनाना है। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। स्वर्ग और नर्क में तो बहुत फर्क है। वह है शिवालय। यथा राजा रानी तथा प्रजा पवित्र। तुम कल्प–कल्प बनते हो। कल्प पहले मिसल ही बाप पुरुषार्थ कराते हैं। कौड़ियों पिछाड़ी टाइम वेस्ट मत करो। मैं आया हूँ पद्मा–पद्मभाग्यशाली बनाने। तो रहम पड़ता है। अभी टाइम बहुत अच्छा है। प्राइम मिनिस्टर भी फिमेल है। उनको समझाना चाहिए। फिमेल स्वर्ग की स्थापना कर रही है। द्वार खोल रही है। तो मदद करनी चाहिए। वन्देमात्रम् है ना। पहले उनको अच्छी रीत पकड़ना चाहिए। माताओं को ही कलश मिला था। तो ऐसे राय निकाल लिखना चाहिए। माताओं को अमृत का कलश मिलता है भारत को फिर से स्वर्ग बनाना। एक आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापन करने लिए। अभी हमको मदद करो तो तुम भी ऊँच पद पा सकते हो। ऐसी2 युक्ति से लिखते रहो। फिर कह सकेंगे तुमने सुना नहीं। माताओं की बड़ी सही हो। माताएँ ही माताएँ। ज्ञानामृत के कलश से हम हरेक को पवित्र बनाते हैं। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। अपना भी कल्याण करना है। औरों का भी करना है। न करेंगे तो आपे ही पछतावेंगे। अच्छा, मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।